NH Debate - 21

भारतीय समाज, आस्था और महिला

पिछले सप्ताह हुए मुंबई गैंग-रेप केस पे बरखा दत्त का "We the People" भी देखा और रविश कुमार का "हमलोग" भी पर किसी के भी प्रोग्राम में ना तो खुद इनके होस्ट और ना ही कोई महानुभाव इतनी दूरदर्शिता का मिला जो यह कह सका कि अगर समाज में औरतों को कठपुतली और वस्तु समझने की प्रवृति बदलवानी है, तो हर धार्मिक मंदिर-मस्जिद में एक पुजारी-मौलवी के साथ एक पुजारिन और महिला मौलवी भी नियुक्त करवाओ। क्योंकि जब तक भारत में यह चीज धर्म की गर्भ आस्थाओं के केंद्र में नहीं बदली जाएगी, चाहे जितने ऐसे प्रोग्राम करो, भूल जाओ कि भारतीय मर्द की सोच को महिला के लिए रत्ती-भर भी डिगा पाओगे। जब तक धार्मिक स्थलों पर महिला द्वितीय श्रेणी (Secondary Status) पर रखती जाती रहेगी, उसके मान-सम्मान का ऐसे ही चीरहरण होता रहेगा|

धर्म और आस्था ही ऐसी चीजें होती हैं जो जैसी दिनचर्या में देखने-सुनने और बरतने को मिलती हैं इंसान उसी के अनुरूप ढलता है और जिस समस्या का मूल ये लोग इन डिबेटों में ढूँढने का ढोंग करते हैं वो हमारे धर्म और आस्था के शुद्धिकरण की ओर इशारा करती हैं। वो इशारा करती हैं कि मंदिरों के चबूतरों पे महिलाओं के हाथ सिर्फ पूजा करने के लिए ना हों, बल्कि वो मंदिर के मर्द पुजारी के समरूप प्रसाद बाँटनें के लिए भी हों| जिस दिन मर्द जिस आदर और सत्कार भाव से एक मर्द पुजारी से मंदिर में प्रसाद और आशीर्वाद ग्रहण करता है, ऐसे ही एक महिला पुजारी से भी ग्रहण करेगा तो औरत के प्रति उसकी श्रद्धा भी बदलेगी और सत्कार भी|

Phool Kumar Malik

Nidana Heights

26/08/2013